हम तुम

प्यार है पर मुलाकात नहीं....

दीपम शुक्ला

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Deepam Shukla 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-356-0

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: June 2026

01/04/2024

हम

हम यानी मैं... यह किताब — पूछना, समझना, बोलना और समझाना — सब कुछ मैं ही तो हूँ।

हर पन्ने पर मेरा कोई अंश सांस लेता है, हर शब्द में मेरी कोई अधूरी बात छिपी है।

कभी सवाल बनकर उठती हूँ, तो कभी जवाब बनकर लौट आती हूँ।

ये किताब सिर्फ लिखी नहीं गई — इसे जिया गया है, महसूस किया गया है, रोया गया है।

क्योंकि मैं इसका लेखक नहीं,
इसका अनुभव भी हूँ।

तुम

जो मेरी किताब और मेरी भावनाओं के पन्नों में झाँक रहे हो... शायद कहीं मुझमें ही बसे हो।

"अगर तुम यहाँ तक आए हो, तो शायद वजह यह नहीं कि तुम कुछ पढ़ना चाहते हो,

बल्कि इसलिए आए हो क्योंकि तुमने किसी को दिल दे दिया है, या कोई तुम्हारा दिल ले गया है।

हम

तो तुम मुझे बताओ, तुम्हारे यहाँ आने का कारण क्या है?

तुम

मेरे यहाँ आने का कारण यह है कि मैंने किसी को अपना दिल दे दिया है।

अब हर सांस में उसका अहसास है, हर खामोशी में उसका नाम गूँजता है।

जितना चाहूँ उससे दूर रहना, उतना ही उसके ख्याल मेरे दिल में उतर आते हैं।

और मेरी रूह, जैसे उसकी यादों के बिना अधूरी हो, बस उसे पाने की चाहत में जिंदा रहती है।

हम

हाँ, सच में.........

तुम्हारे जीवन इतना सब कुछ चल रहा है?

तुम

जी हाँ सच में, मेरी जिंदगी उसकी छाया में फँसी हुई है

हर सांस उसके बिना सूनी, हर धड़कन उसकी याद में डूबी।

ख्वाबों में उसका नाम अनकही पुकार बनकर गूँजता है

और मेरी रूह, उसकी अनुपस्थिति में कहीं खो जाती है,

जैसे कोई अधूरी कहानी बस इंतजार में बह रही हो।

हम

अच्छा! बताओ फिर कौन है वो?

तुम

है कोई चाँद-सा,

जो अपनी चाँदनी की रोशनी में मेरा दिल ले गया।

अब न जाने क्यों,

उसे देखे बिना न यह रात ढलती है,

न ही सवेरा आता है।

हर किरण में उसकी याद झिलमिलाती है,

हर सन्नाटे में उसका नाम गूंजता है।

वो जो गया, तो रोशनी भी साथ ले गया

अब बस तन्हाई है, और उसकी चाँदनी की चाह बाकी है।

मैं अब रात-दिन बस उसके बारे में ही सोचता रहता हूँ।

हम

"मतलब… सच में तुम्हें उससे प्यार हो गया है?"

वो मुस्कुराया, जैसे कुछ छिपाने की कोशिश कर रहा हो।

मैं हँसकर बोला — "ठीक है, मैं आशा करता हूँ बहुत जल्द तुम्हारी उससे बात हो और तुम्हारी कहानी कुछ आगे बढ़ जाये।

तुम

हाँ, मैं भी यही चहाता हूँ कि जल्द ही हम आपस में बात कर ले -

पर पता नहीं क्यों, ये दिल उसके लिए बहुत घबराता है, शायद एक डर-सा बन गया है और एक बेचैनी-सी रह गई है, हर पल उसकी याद आती है, हर पल उसका चेहरा सामने नजर आता है और अब इतना पक्का हो चुका है कि उसके बिना रहना मेरे लिए अब बहुत मुश्किल होने वाला है।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि हम हमेशा साथ रहें, चाहे वह मुझे स्वीकार करे या न करे, लेकिन वह हमेशा मेरे पास रहे।

हम

तुम्हें पता है, आज मैंने सुना कि वह अपने दोस्तों के साथ तुम्हारे बारे में बातें कर रही थी।

तुम

हाँ, सच में तुम सच बोल रहे हो ना? झूठ मत बोलना… सच-सच बताओ।

हम

हाँ भाई सच में, मैंने सुना कि वो लोग तुम्हारे बारे में बात कर रहे थे। "वो कह रहे थे कि तुम कल उसके पीछे पीछे जा रहे थे। क्या ये सच है?"

तुम

सच तो है, पर मैं उसके पीछे पीछे जाना नहीं चाहता था। मैं तो बस वहाँ से गुजर रहा था, तभी वह अचानक मेरे सामने आ गई। उसी रास्ते पर वह मेरे आगे आगे जा रही थी। तो क्या मैं इसे कहूँ कि मैं उसका पीछा कर रहा था? बताओ तुम।

हम

हाँ, सच कहा तुमने, इसे पीछे पीछे जाना नहीं कह सकते। यह तो बस एक संयोग था कि तुम दोनों एक सड़क पर अचानक मिल गए ,पर मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह संयोग दोबारा न हो। आपकी बारी पर, तुम दोनों अपनी इच्छा से, एक अनकही सड़क पर, एक-दूसरे का हाथ पकड़कर साथ चलते जाओ और तुम्हारा सफर, तुम्हारी मंजिल से ज्यादा खुबसूरत हो।

तुम

पता नहीं वो दिन कब आयेगा, जब हम दोनों एक साथ खुश रह पायंगे ।

हम

आएगा, आएगा बहुत जल्द ही वो दिन आएगा - तुम बस भगवान पर विश्वास रखो।

तुम

हाँ, मुझे पूरा भरोसा है भगवान पर।

हम

अच्छा तुम एक बात बताओ — तुम क्या-क्या कर सकते हो, उसके लिए?

तुम

मैं फ़िल्मों की तरह उसके लिए चाँद-तारे तोड़कर तो नहीं ला सकता,

पर उसकी ख़ुशी के लिए वो सब कर सकता हूँ

जिससे उसके चेहरे पर मुस्कान आ जाए।

चाहे इसके लिए मुझे कितनी भी मेहनत क्योंना करनी पड़े,

हर वो चीज़ जो उसे ज़रा-सी भी ख़ुशी दे,

मैं उसके लिए हर हाल में कर दुंगा।

हम

यार, तुम कितने अच्छे हो! मैं तुम दोनों के लिए बहुत खुश हूँ। और ये बताओ — तुम उसे ये सब बातें कब बता रहे हो, कि तुम उससे कितना प्यार करते हो?

तुम

पता नहीं मुझे मैं उसको यह सब कब बता पाऊंगा मैं जब उसको देखता हूँ तब मुझे कुछ याद ही नहीं रहता। मैं भूल जाता हूँ कि मुझे उससे बात भी करनी है। मुझे डर लगता है कि अगर मैंने ये सब उसे बता दिया और कहीं उसे बुरा लग गया, या वो मुझसे नाराज़ हो गई, तो मैं क्या करूँगा?

शायद इसलिए मैं उसे कभी बता ही नहीं पाऊँगा। कि मैं उससे कितना प्यार करता हूँ। अगर भगवान ने चाहा तो शायद वो सब कुछ खुद ही समझ जाएगी।

हम

सही कह रहे हो तुम, तुम्हारा डर भी ठीक है — कहीं अगर वह नाराज़ हो गई तो बात बनने से पहले ही बिगड़ जाएगी।

तुम

तुमको पता है कल मैंने उसके लिए चार पंक्तियां लिखी हैं। जिसको पढ़ कर मैं बार- बार खुश हो जाता हूं।

हम

अच्छा, मुझे भी तो बताओ — क्या लिखा है तुमने? मैं भी तो जानूँ कि तुम कैसा लिखते हो।

तुम

“हाँ, सुनो फिर, मैंने क्या लिखा है। मैंने लिखा है —

तुम चाँद हो, तुम प्यारी हो,

तुम राधा सी और न्यारी हो,

तुम मेरी आँखों की ठंडक,

तुम जीवन का सहारा हो,

तुम ही मेरे जीवन का एक मात्र किनारा हो।

बताओ कैसे लिखा है मैंने?

हम

पहले तो तुम मुझे बताओ कि यह सब तुमने लिखा है?

तुम

हाँ भाई, मैंने ही लिखा है। तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो ?

हम

क्योंकि यह बहुत अच्छा और बहुत प्यारा लिखा है, इसलिए मुझे लगा कि तुमने इसे कहीं से पढ़कर लिखा है। इसलिए मैंने पूछा कि क्या सच में यह तुमने ही लिखा है?

तुम

कहीं से पढ़कर नहीं लिखा बल्कि, यह सब मैंने उसे याद करते-करते खुद से ही लिखा है।

हम

तुमने सच में बहुत अच्छा लिखा है। मुझे यह पढ़ने में बहुत अच्छा लगा, तो सोचो, उसे सुनकर कितना अच्छा लगेगा! पर एक बात बताओ — तुम यह सब उसे कब बता रहे हो? अगर तुम कहो, तो मैं उसे बता दूँ कि तुम उसे कितना पसंद करते हो, और तुम्हारे दिल में उसके लिए कितना ज़्यादा प्यार है।

बोलो ना , क्या मैं उसे सब कुछ बता दूँ? सोच क्या रहे हो, बोलो… .. … .

तुम

नहीं, तुम उसे कुछ भी मत बताना। सही समय आने पर मैं खुद ही उसे सारी बातें बता दूँगा।

हम

"सही समय कभी नहीं आता", और तुम्हारा सही समय कब आएगा? तुम्हें खुद भी पता है यह बात? अगर पता है तो तुम मुझे भी बता दो।

तुम

सच बताऊँ तो मुझे भी नहीं पता कि सही समय कब आएगा। और तुम बार-बार मुझसे यह सवाल पूछकर परेशान मत किया करो, मैं वैसे भी बहुत परेशान हूँ।

हम

मेरे सवाल पूछने से तुम परेशान क्यों होते हो?

तुम

क्योंकि इस सवाल का जवाब मुझे खुद भी नहीं पता। अगर मुझे पता होता, तो मैं तुम्हें पहले ही बता देता।

हम

तुम परेशान मत हो, मैं सब कुछ समझ सकता हूँ — तुम्हारी परेशानी, तुम्हारा दर्द और तुम्हारा अकेलापन, सब महसूस कर सकता और समझता भी हूँ।

तुम

सब कहते हैं, मगर समझता कोई नहीं। तुम कैसे समझ सकते हो मेरी परेशानी? “क्या तुम्हे कभी किसी से प्यार किया हुआ है?”

हम

"हाँ, मुझे भी किसी से प्यार हुआ है, और मेरे जैसा प्यार शायद ही कोई व्यक्ति किसी से कर सकता है।

तुम

"अच्छा, तो तुम मुझे बताओ — तुम्हें कितनी बार प्यार हुआ है?

हम

कितनी बार का क्या मतलब होता है प्यार तो सिर्फ एक बार होता है। दूसरी बार तो समझौता या किसी कारण से लोग एक-दूसरे के साथ रहते हैं बस, लेकिन प्यार नहीं होता।

तुम

तो तुम लोग साथ में खुश रहते हो?

हम

तुमको किसने कहा कि हम साथ में रहते हैं?

तुम

मुझे लगा कि तुम लोग एक दूसरे से प्यार करते हो, तो साथ में ही रहते होगें।

हम

और तुमसे ये किसने कहा कि हम दोनों एक दूसरे से प्यार करते हैं?

तुम

अरे, तुम कहना क्या चाहते हो? साफ-साफ बताओ मुझे, क्या है तुम्हारी कहानी?

हम

मेरी कहानी सुनना चाहते हो? इतना समय है तुम्हारे पास? समझ पाओगे?

तुम

ये सब बड़ी-बड़ी बातें छोड़ो, और मुझे साफ-साफ सब बता दो, आखिर हुआ क्या है?

हम

सुनो फिर –

चाँद जैसी प्यारी, वो चाँदनी सी है;

मेरे हर पल इंतज़ार का फल है वो, इंसान जैसी दिखती तो है, पर मेरे लिए भगवान से कम नहीं है। वो… … ..

है, एक लड़की मेरी ज़िंदगी में, जो मेरे लिए भगवान है। मैंने भगवान को तो नहीं देखा, पर उसे देखकर लगता है, कि शायद भगवान भी ऐसे ही दिखते होंगे।

एक दिन अचानक वो मेरे सामने आ गई।

जब तक मेरा दिमाग कुछ समझ पाता,

तब तक मेरा दिल उसके पास जा चुका था। उसके बाद किसी भी लड़की के लिए वैसा महसूस नहीं हुआ जैसा उसके लिए होता है

वो मेरी ज़िंदगी की पहली लड़की है,

जिसको खुश रखने के लिए मेरा दिल सब कुछ करने को तैयार है उसको देखकर ऐसा लगता है जैसे मेरी माँ सामने हो, उसका चेहरा भगवान शिव के जैसा है-

फिर उसकी एक दोस्त ने हमारी बात करवाई।

जब मैंने उससे पहली बार बात की,

तो मुझे भी वैसा ही डर लग रहा था,

जैसा तुम्हें लग रहा था।

मैं भी सोच रहा था —

अगर मेरी किसी बात से उसे बुरा लग गया

और वो चली गई,

तो मैं क्या करूँगा?

मेरा भी दिमाग काम करना बंद कर देता था, और दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगता था जब मैं उससे बात करता था।

पर धीरे-धीरे सब कुछ ठीक हो गया। हम आपस में अच्छे से बात करने लगे,

एक-दूसरे को समय देने लगे,

एक-दूसरे के साथ सुख-दुःख,

अच्छा-बुरा — सब कुछ बाँटने लगे।

बहुत ही अच्छा समय चल रहा था शायद मेरा, फिर मेरी ज़िंदगी में एक नया मोड़ आया, जो हमारी कहानी को एक नए रास्ते पर ले गया।

तुम

मुझे जल्दी बताओ, क्या मोड़ था?

हम

जल्दी मत करो। अगर मैं जल्दी नहीं करता तो शायद हम आज एक-दूसरे से बात कर रहे होते।

इसलिए आराम-आराम से सुनो।

एक दिन उसने मुझसे पूछा, 'क्या तुम मुझे पसंद करते हो?'

तो मैंने उसे सब कुछ एक बार में ही बता दिया —

कि मैं उसे कितना पसंद करता हूँ,

और कितना ज़्यादा प्यार करता हूँ।

मैंने उसे बोला, मैं केवल तुम्हें पसंद ही नहीं करता, बल्कि तुमसे बहुत ज़्यादा प्यार करता हूँ।

तुमसे बात न होने पर मेरा दिन अधूरा सा लगता है। जब हमारी पहली बार बात हुई थी उस दिन भी मैंने तुमको बोला था कि मैं तुम्हें पंसद करता हूँ और आज तुमसे बात करते करते , मैं तुमसे इतना ज्यादा प्यार करने लगा हूं कि शब्दों में तुमको समझा नही सकता।

तुम

फिर, क्या कहा उसने?

हम

उसने कहा – यार तुम मत करो इतना ज्यादा प्यार मुझसे, तुमको बहुत तकलीफ होगी और मैं भी परेशान रहुंगी।

इसलिए तुम मुझसे प्यार मत करो।

तुम

उसने ऐसा क्यो बोला कि प्यार मत करो?

हम

यही सवाल जब मैंने उसको पूंछा तो उसने मुझसे कहा शायद मैं तुमसे प्यार नहीं करती, मैं तुमको केवल अपना अच्छा दोस्त मानती हूँ और दोस्त रहना चाहती हूँ बस।

तुम

अरे यार, उसने ये सब क्यों बोला? फिर तुमने उसे क्या कहा?

हम

मैंने उसको बोला-

मेरा तुम्हें पसंद करना और तुमसे प्यार करना, ये मेरी फ़ीलिंग्स हैं। अगर तुम्हारे पास मेरे लिए फ़ीलिंग्स नहीं हैं, तो मैं उसमें कुछ नहीं कर सकता। ये तुम्हारा अपना फैसला है।

मैं अब तुमसे सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि तुम बस मुझे कभी छोड़कर मत जाना। अगर तुम दोस्त बनकर साथ रह सकती हो, तो वैसे ही रहो। बस कभी मुझे छोड़कर मत जाना, प्लीज़ क्योंकि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता, ये बात तुम अच्छे से जानती हो।

तुम

यह सब सुनकर उसने क्या कहा?

हम

फिर उसने मुझसे पूछा कि तुम मुझे क्यों पसंद करते हो, और मुझसे इतना ज़्यादा प्यार क्यों करते हो?

मैंने कहा, जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था, तब तुम्हारे चेहरे की सुंदरता देखकर तुम्हें पसंद कर लिया था। लेकिन जब हमारी बातें शुरू हुईं, तब मैंने तुम्हें सुना, समझा और जाना — मुझे तुम्हारे दिव्य, साफ़ दिल और तुम्हारे सुंदर चरित्र के कारण तुमसे प्यार हो गया। मैंने पहले कभी किसी में ऐसा महसूस नहीं किया, अब ऐसी फ़ीलिंग्स मेरे पास किसी और के लिए कभी नहीं होने वाली। कुछ भी हो जाये प्लीज़ तुम मुझे कभी छोड़कर मत जाना।

"ये सब सुनकर उसने कहा — हाँ, मैं कहीं नहीं जा रही हूँ, यहीं हूँ। और इन सब बातों के लिए तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे पता है, तुम मेरी कितनी इज्जत करते हो, इसलिए ये सब बोलने की कोई जरूरत नहीं है लेकिन यार तुम मुझसे प्यार मत करो वरना तुम खुद (दुखी) परेशान रहगो मुझको लेकर।

तुम

एक बात बताओ वो ऐसा क्यों बोली की तुमको दुख होगा, परेशान रहगो तुम?

हम

उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसे पता था कि वह मुझसे प्यार नहीं करती, लेकिन मैं उसके लिए कुछ भी कर सकता हूँ। मेरे लिए उसकी

अहमियत सबसे ज़्यादा थी — यह बात वह बहुत अच्छी तरह जानती थी।

वो डरती थी – “कि मैं तो उससे प्यार नहीं करती, लेकिन वह मेरे लिए कुछ भी कर सकता है। अगर मैं किसी भी कारण से उससे दूर हो गई, तो वह इतना ज़्यादा परेशान और दुखी होगा कि मैं सोच भी नहीं सकती। यह बात वह अच्छी तरह जानती थी, इसलिए मुझे प्यार करने से मना करती थी।

तुम

अच्छा, तो फिर उसके जाने का क्या कारण था?

हम

उसके जाने का असली कारण तो मुझे भी नहीं पता, पर शायद एक कारण यही था कि मैं उसे बहुत ज़्यादा प्यार करता था, और इसी बात से उसको डर लगता था। लेकिन अगर वह मुझसे दूर रहकर खुश है, तो मैं भी उसके लिए बहुत खुश हूँ। हाँ, यह बात अलग है कि मेरा एक पल भी उसके बिना नहीं कटता। बस उसके इंतज़ार में जी रहा हूँ कि एक दिन वह लौट आएगी, तो मैं उसे बताऊँगा कि उसके बिना मैं मर-सा गया हूँ — अब उसके बिना रहा नहीं जाता। और उस गलती के लिए माफ़ी भी माँगनी है, जो जाने-अनजाने में मुझसे हुई है।

तुम

तो क्या तब तक तुम ऐसे ही उदास रहोगे? अपने आप को ऐसे ही अकेला रखोगे?

हम

किसने कहा तुमसे कि मैं अकेला हूँ? वो है ना — हर पल मेरे साथ रहती है।

मैं उसे अपने भीतर महसूस करता हूँ। उसका नाम मेरे चारों ओर हवा की तरह बहता है।

उसकी याद ही मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

और तुम्हें पता है, जाते समय उसने मुझसे कहा था —

अपने मम्मी-पापा का ध्यान रखना। तुम्हें जीवन में आगे बढ़ना है।

मेरे जाने से तुम्हारी ज़िंदगी रुक नहीं जाएगी। इसलिए अपना ख़याल रखना।

भगवान ने चाहा तो हम एक दिन मिलेंगे।

उसने कहा था — 'भगवान ने चाहा तो एक दिन हम मिलेंगे।'

जबकि उसे पता है कि मेरा भगवान तो वही है।

मैं बस उस दिन का इंतज़ार कर रहा हूँ,

जब वो मुझसे मिलेगी।

उस दिन को ख़ास बनाने, यादगार बनाने की हर पल तैयारी कर रहा हूँ।

- मैं हर सुबह उसकी याद से शुरू करता हूँ,
- हर रात उसकी चाह में ढल जाता हूँ।
- दिन बीतते हैं जैसे इंतज़ार की सीढ़ियाँ —

- और मैं हर पल उस एक दिन की तैयारी करता हूँ,
- जब वो लौट आएगी, मुस्कुराते हुए कहेगी —
- देखो, मैं आ गई...

तुम

मुझे लगता था कि सिर्फ मेरी ज़िंदगी में ही परेशानियाँ चल रही हैं,

लेकिन तुम्हारी कहानी सुनने के बाद

मुझे अपनी परेशानियाँ बहुत छोटी लगने लगीं।

मैं तो भगवान से यही प्रार्थना कर रहा हूँ कि मेरी कहानी शुरू होने से पहले

तुम्हारी कहानी का एक अच्छा अंत हो सके, सब कुछ ठीक हो जाए — बहुत जल्द।

हम

मेरी कहानी का अंत तब तक नहीं होगा,जब तक मैं खुद ना चाहूँ

यह कहानी मैंने ही शुरू की थी,

अब इसका अंत मैं कभी लिखूँगा ही नहीं —

क्योंकि यह सिर्फ मेरी नहीं,

हमारी कहानी है।

देखो, मुझे नहीं पता क्या सच है, क्या झूठ है,क्या सही है, क्या ग़लत है।

मुझे बस इतना पता है कि अगर हम साथ होंगे, तो सब ठीक हो जाएगा।

मेरा उसके लिए जो प्यार है,

वो तो जीवन भर रहेगा।

क्या हुआ अगर वो मुझसे प्यार नहीं करती, या मेरे साथ नहीं रहती —

अगर मेरा प्यार सच्चा है,

तो वो एक दिन ज़रूर लौट आएगी।

तुम

पर यारा, ऐसा क्यों होता है कि जिस व्यक्ति से हम प्यार करते हैं,

वही हमसे दूर चला जाता है?

हम

ऐसा नहीं है कि प्यार करने वाला व्यक्ति छोड़कर चला जाता है, या वो दूर हो जाता है। वह व्यक्ति हमारे जीवन में आता ही इसलिए है,

ताकि हम अपने जीवन के बारे में सोचें—

कि हमें आगे क्या करना है, क्या बनना है। उस व्यक्ति का जीवन से जाना या तो हमें सही राह पर ले आता है, या हमारे जीवन को ठहरा देता है।

मेरे साथ भी यही हुआ।

जब वो मेरे जीवन में आई, तो मैंने उससे बहुत कुछ सीखा।

उसके आने से मैं चीज़ों को समझने लगा था, खुद को समझने लगा था।

और जब उसने मुझसे जाने की बात कही,

तो मेरा पहला जवाब माफ़ी था।

सबसे पहले मैंने उससे माफ़ी माँगी।

मुझे लगा कि मुझसे अनजाने में कोई गलती हो गई है— शायद मैंने कुछ ऐसा कह दिया, जिससे उसे बुरा लगा,

और इसी वजह से वह जाने की बात करने लगी। लेकिन ऐसा नहीं था।

उसने मुझे किसी भी बात के लिए गलत नहीं कहा—

उसे तो बस जाना था… पता नहीं क्यों।

आज पूरे आठ महीने हो गए हैं,

हमारी बात नहीं हुई,

लेकिन मैं आज भी उसका इंतज़ार कर रहा हूँ—

इस उम्मीद में कि एक दिन वह लौट आएगी,

और सब कुछ फिर से ठीक हो जाएगा।

तुम

आठ महीने हो गए हैं, और तुम कब तक इंतज़ार करोगे? खुद को उसके जाने का कारण बनाकर कब तक बैठे रहोगे आखिर,यह सब कब तक चलेगा?

हम

उसके जाने की वजह मैं ही हूँ, क्योंकि वो हमेशा से सही रही है। हर बड़ी से बड़ी बात को समझना और उसे ठीक करना उसे अच्छे से आता है। जब वो सही है, तो कुछ ना कुछ कमी मुझ में ही रही होगी ,जिस कारण उसने जाने का फैसला लिया, सब मेरी ही गलती का परिणाम है कि मैं आज अकेला हूं।

कहने को तो बहुत से लोग हैं मेरे पास जो मुझे समझते हैं, मगर उसके जैसा कोई नहीं है।

बिना कहे जो बहुत कुछ समझ जाती, आज वो मेरे एक आँसू के गिरने पर भी नहीं आती।

तुम

और तुम्हारा अकेले रहना और इंतजार का क्या?

हम

देखने में, मैं अकेला लगता हूँ, पर मैं सच में अकेला नहीं हूँ। वो मुझमें ही रहती है। मैंने खुद में उसे ढूंढ़ लिया है। हर पल वो मेरे साथ चलती है — चाहे दिन हो या रात ,हर पल हम साथ ही रहते हैं। मेरी हर परेशानी का हल वही है।

"दिल में नहीं, उसको खुद में बसाया है। जब कभी दर्पण में खुद को देखा, तो उसको ही पाया है।"

तुम

अच्छा तुम मुझे बस ये बताओ, इंतजार कब तक करोगे उसका?

हम

किसी का इंतज़ार करने में जो मज़ा है, जो बेचैनी है, उसे हर कोई नहीं समझ सकता।

तुमको पता, ये चार लाइन जब मैंने लिखी थी तब मुझे लगा था कि वो समझ जाएंगे, कि मुझे उससे मिलना है किसी भी किमत पर, पर जब मैं खुद इन लाइन को पढ़ता हूँ, तो सोचता हूँ कि ये मुझे नहीं लिखनी चाहिए

थी, क्योंकि शायद उसके इंतज़ार में एक दिन बीना मिले मेरी जान ना चली जाए। तो इंतजार, डर और बेचैनी मेरे जीवन का हिस्सा बन गया है कुछ सालों से… .. …

तुम

अब मैं क्या कहूँ, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा — क्यों होता है ये सब? जिस इंसान से हम प्यार करते हैं, वो क्यों चला जाता है हमें छोड़कर?

जो व्यक्ति हर बात को अच्छे से जानता है, ये तक कि उसके बिना जिंदगी बीना सांसो के चलने लगती है, फिर भी वो चला जाता है। इसमें गलती किसकी होती है — खुद की, या उस व्यक्ति जो छोड़कर चला जाता है?

बताओ?

हम

"इन सब चीज़ों में गलती शायद समय की ही होती है। वो व्यक्ति, जो मेरी हर छोटी-बड़ी बात को समझता है, अगर फिर भी मेरी ज़िंदगी से चला जाता है, तो यक़ीनन उसकी भी कोई न कोई मज़बूरी रही होगी। उसके लिए मुझे छोड़कर जाना उतना ही मुश्किल हुआ था, जितना मेरे लिए उसके बिना जीना मुश्किल है

उसका आना मेरे जीवन में एक नए जीवन का अहसास था, और अब उसके जाने के बाद हर दिन मृत्यु का अहसास दिलाता है। इसमें उसकी कोई गलती नहीं है कि वह मेरे जीवन से चली गई। शायद कहीं न कहीं मैं ही गलत था।

तुम

“तो तुम इतने परेशान क्यों होते हो, जबकि तुमने अपनी गलती की माफ़ी तो माँग ली है। जब उसे बातें समझ में आएँगी, तब वह तुम्हें एक दिन माफ़ भी कर देगी और वापस भी आ जाएगी।”

हम

कभी-कभी सब कुछ पता होने के बावजूद भी दिमाग साथ नहीं देता। जैसे मुझे पता है कि वो एक दिन वापस आ जाएगी, फिर भी मेरा दिल उसके इस वक़्त साथ न होने पर उदास हो जाता है।

सच तो यही है कि जब दिल किसी और के पास होता है, तो दिमाग काम करना बंद कर देता है।

और जब मैंने उसे अपना दिल दिया था, यानी जब मैंने उसे पसंद किया था, तब मैंने यह बात गांठ बाँध ली थी कि इस व्यक्ति के लिए अपने पूरे जीवन में कभी भी कुछ भी करना पड़ेगा, तो मैं करूँगा — चाहे कुछ भी हो जाए।

तो शायद यही मेरे जीवन की परीक्षा चल रही है — कि इस समय वह मेरे साथ नहीं है। लेकिन मुझे थोड़ी मेहनत की जरूरत है और इस परीक्षा को मैं पास करके दिखाऊँगा ।

तुम

“हाँ, मैं समझ गया। समय तुम्हारी परीक्षा ले रहा है, और मैं यह भी जानता हूँ कि समय एक बार फिर पलटेगा, और वह वापस आ जाएगी।”

हम

हाँ, हाँ, मुझे पता है — तुम्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा। तुम बस मेरी बातों में हाँ में हाँ मिला रहे हो, और उनमें दो बातें जोड़कर फिर मुझसे पूछ लेते हो। तो ज्ञान मत दो, जब कुछ समझ में ही नहीं आ रहा।

तुम

अच्छा जी, ये क्या बात हुई! मुझे तो सब समझ में आ रहा है — तुम्हारा उसके लिए प्यार, और उसके न होने की बेचैनी — सब समझ सकता हूँ मैं।

बस बात इतनी सी है — तुम्हारी भावनाओं को मैं महसूस तो नहीं कर सकता, लेकिन उन्हें अच्छी तरह समझ सकता हूँ। ठीक है!

हम

तुम नाराज़ मत हो। मुझे पता है, तुम समझ रहे हो — मैं अब ऐसा ही हो गया हूँ, छोटी-छोटी बातों पर ग़ुस्सा हो जाता हूँ। किसी को कुछ भी बोल देता हूँ, तुम अब तक सुन रहे हो, यही मेरे लिए काफ़ी है, क्योंकि आजकल बहुत से लोग बिना सुने ही चले जाते हैं।

तुम

अच्छा एक सवाल और था मेरा।

हम

हाँ, पूछ लो — अब तो मुझे बताने में भी मज़ा आने लगा है।

तुम

उसका नाम क्या है, ये तो तुमने मुझे अभी तक बताया ही नहीं। बताओ , मुझे।

हम

उसका नाम एक कहानी है,

वह जीवन जीने की ईशा है,

वह मेरे वर्तमान का भविष्य है,

वह मेरे तारों का चाँद है,

वह मेरे जीवन का इतिहास है,

वह मेरे हाथों की लकीरों में है,

वह ग़ालिब की शायिरयों में है।

तुम

अरे, मैंने तुमसे सिर्फ़ नाम पूछा था, इतना सब नहीं सुनना था मुझे। तुम बस मुझे नाम बता दो।

हम

मैंने तुम्हें इतना कुछ बताया, पर नाम नहीं बताया — तो समझ लो। मैं उसका नाम बताना नहीं चाहता।

सब कुछ तो बता दिया —

अपना डर, अपनी बेचैनियाँ,

वो रातें जब नींद नहीं आती थी,

वो सुबहें जब उसकी याद से दिन शुरू होता था।

मैंने हर एहसास कह डाला तुमसे,

वो बातें भी जो किसी से कभी नहीं कहीं,

मगर नाम नहीं बताया।

क्योंकि कुछ नाम कहने के लिए नहीं होते,

वो बस महसूस किए जाते हैं —

हवा में, खामोशियों में,

किसी पुरानी किताब की खुशबू में,

अगर तुम समझ गए हो,

तो अब कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं —

जो नाम जुबान पर नहीं आता,

वही सबसे गहरा होता है।

तुम

हम्म, समझ गया मैं।

हम

पता है, आज फिर मेरा दिल मर रहा है…

उससे बात करने के लिए, उससे मिलने के लिए तड़प रहा है।

क्या करूँ मैं?

कोई समझा दो उसको,

जो कुछ मेरे साथ हो रहा है,

वो सब जाकर बता दो उसको।

मैं नहीं रह सकता उसके बिना।

ये जो प्रेम हुआ है मुझे — एकतरफ़ा है।

इसे दोतरफ़ा कर, या फिर मत कर

मगर हर घड़ी, हर पल मेरे साथ चल।

तुम्हें पता है, जहाँ तक मैंने प्यार को समझा है, वहाँ तक मैं इतना तो जान ही चुका हूँ कि-

प्यार जो होता है, वो मृत्यु से परे होता है। अगर तुम्हें किसी व्यक्ति से प्यार है, और फिर भी वह तुम्हारे पास नहीं है तो इस परिस्थिति में तुम्हारा दिमाग तुम्हें कुछ समय के लिए उस व्यक्ति से दूर रहने की हिम्मत देगा, क्योंकि तुम्हारे दिमाग को भी पता है कि दूसरे व्यक्ति की अपनी एक ज़िंदगी है — कौन उसके जीवन में रहेगा, कौन नहीं रहेगा, इसका निर्णय करने का पूरा अधिकार उसी को है।

लेकिन तुम्हारा दिल हर पल उसके साथ रहने को तड़पता रहेगा, बेक़रार रहेगा — और फिर पता है क्या होगा?

तुम्हारा दिल तुम्हारे दिमाग पर हावी हो जाएगा, और तुम उस व्यक्ति से मिलने और उसके साथ रहने की ज़िद करने लगोगे।

जिसके कारण वो व्यक्ति तुमसे और दूर हो जाएगा — ठीक वैसे ही, जैसे मेरे साथ हुआ था।

तुम

लेकिन अगर वही व्यक्ति ये जानता है कि सामने वाला इंसान उसके बिना नहीं रह सकता,

तो फिर वो कैसे छोड़कर जा सकता है?

हम

किसी को छोड़कर जाना, दोनों ही व्यक्तियों के लिए

कठिन होता है।

जिस व्यक्ति को छोड़ा जाता है, उसकी तो आधी ज़िंदगी उसी पल ख़त्म हो जाती है,

जब उसकी ज़िंदगी से वो व्यक्ति चला जाता है, जिसे वो प्यार करता है।

फिर उसके लिए जीना या मरना कोई मायने नहीं रखता —

वो अपना जीवन जीता है तो सिर्फ़ अपने परिवार के लिए।

और यही बात उस व्यक्ति पर भी लागू होती है जो

छोड़कर जाता है।

उसके दिल, दिमाग और ज़िंदगी — तीनों पर गहरा

असर पड़ता है,

क्योंकि उसे पता होता है कि जिस व्यक्ति को वो

छोड़कर आयी है,

अब वो अपनी ज़िंदगी कैसे बिताएगा।

और उसे काफी समय तक पछतावा भी होता है,

लेकिन शायद फिर वो सारी बातों को पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाती है,

क्योंकि उसकी अपनी ज़िंदगी है।

उसकी ज़िंदगी में किसे साथ रखना है और किसे नहीं, ये उसका अपना फैसला है।

तुम

क्या हुआ ? आज फिर तुम दुःखी लग रहे हो, और थोड़े चिंतित भी।

हम

दुखी नहीं हूँ, बस थक चुका हूँ अपनी ज़िंदगी से।

अब इस जीवन से आज़ाद होना चाहता हूँ।

मैं हार गया हूँ — सब से, ख़ुद से भी।

तुम

अगर तुम फिर वही सारी बातों को लेकर बैठे रहोगे, तो ज़िंदगी कैसे चलेगी? तुम्हें भरोसा भी है कि वो वापस आ जाएगी —

तुम ही तो उस दिन कह रहे थे कि कभी न कभी वो तुम्हारे प्यार को समझेगी,

और तुम्हें माफ़ करके लौट आएगी।

फिर तुम ये सब बातें क्यों करने लगते हो, बताओ?

हम

क्योंकि मैं क्या कर रहा हूँ, ये मुझे खुद नहीं पता।

हर दिन एक जैसा हो गया है —

सुबह उठता हूँ, तो उसकी तस्वीर देखकर दिन की शुरुआत करता हूँ। फिर पूरे दिन उसी से मिलने के बारे में सोचते-सोचते रात हो जाती है,

और उसकी तस्वीर देखते-देखते कब सो जाता हूँ, पता ही नहीं चलता।

पिछले छह महीनों से यही सब रोज़ हो रहा है मेरे साथ।

मुझे लगता है, मैं एक ऐसे समय चक्र में फँस चुका हूँ जिससे मैं निकलने की कोशिश भी नहीं करना चाहता हूँ।

तुम

क्यों नहीं निकलना चाहते तुम इन सब चीज़ों से बाहर?

हम

क्योंकि मुझे नहीं पता कि हक़ीक़त में हम कब साथ रह पाएँगे।

कम से कम ऐसे तो हम साथ रह लेते हैं —

उसकी यादें हमेशा मेरे साथ रहती हैं।

उसके जाने के बाद कुछ भी नहीं बचा।

अब फ़ोन में उसकी आवाज़ सुनते-सुनते ही समय बीत रहा है, उसकी आवाज़ सुनते समय ऐसा लगता है कि वो वापस आ गई है, मेरे साथ बैठी हुई है।

तुझे सामने बैठकर सुनने की चाह में , मैं ये जीवन जी रहा हूँ,

वरना तेरी आवाज़ तो हर पल फ़ोन में अपने साथ ही रखता हूँ।

तुम

अब मैं क्या करूँ, ये तुम मुझे और खुद को बताओ।

हम

प्यार तुम भी करो, मगर मेरे जैसा मत करना, क्योंकि शायद मेरे जैसा इंतज़ार तुम कर ही नहीं पाओगे।

तुम

मगर तुम तो कहते हो कि, सच्चा प्यार वही होता है जो अंत तक रहता है।

हम

प्यार तो हर किसी को हो जाता है, मगर उसके आने के इंतज़ार में अक्सर लोग हार जाते हैं। मैं भी उसके ना होने से अक्सर टूट जाता हूँ, लेकिन फिर खुद को हिम्मत देकर उसके आने के इंतज़ार में समय बिताना लगता हूँ। जब एक दिन वो वापस आ जाएगी, तो मैं उसे गले लगाकर अपने पास बिठा लूँगा, अपनी हर गलती की माफ़ी माँग लूँगा, और फिर उसे कभी अपने से दूर नहीं जाने दूँगा।

तुम

अब ये सब बातें सुनकर मुझे लगता है कि मुझे इन सब चीज़ों से दूर रहना चाहिए, ऐसा प्यार करना सबके बस की बात नहीं है।

हम

हाँ, जैसी तुम्हारी इच्छा।

तुम

मेरी इच्छा से तुम्हें क्या फर्क पड़ता है? इस कहानी की शुरुआत तुमने की थी, अब तुम इसे पूरा करो — मुझे पूरी कहानी सुननी है।

हम

ये कोई कहानी नहीं है, जीवन है मेरा।

तुम

हाँ, तो मुझे जानना है इस जीवन का पूरा सच।

हम

सुनो फिर – आज फिर मेरी उससे बात हुई क्योंकि कल रात मैंने उसे बहुत सारे मैसेज भेजे थे, तो आज उसने आठ महीने बाद मुझसे बात करने का फ़ैसला किया या शायद मुझ पर दया करके बात कर ली।

तुम

हाँ सच में, उसने तुमसे क्या बात करी?

हम

हमारी बातें अब पहले जैसी नहीं रहीं, वो तो बस मुझे समझाने आई थी, फिर चली गई।

तुम

मेरा मतलब क्या बोला उसने तुमसे, क्या समझाने आयी थी?

हम

उसने मुझसे पहले पूछा – कैसे हो तुम बताओ?

मैंने भी सच बोल दिया, कह दिया कि सच में मैं ठीक नहीं हूँ।

फिर मैंने उससे पूछा — तुम बताओ, तुम कैसी हो?

वो बोली — ठीक ही हूँ।

फिर कुछ देर तक हमारी ऐसे ही बातें होती रहीं, लेकिन जब मैंने उससे कहा — 'यार, कभी-कभी तो हम बात कर ही सकते हैं,' तो वो चुप हो गई।

"फिर उसने मुझसे कहा — 'यार, हम बात नहीं कर सकते।

तो मैं दो मिनट के लिए तो चुप हो गया।

लेकिन फिर मैंने उससे कहा — 'अगर मुझे तुमसे कोई लगाव होता तो यह सब बहुत पहले खत्म हो जाता,

लेकिन यह सिर्फ लगाव नहीं है, मैं सच में तुमसे प्यार करता हूँ। "मैंने उससे कहा — एक साल पूरा होने वाला है, लेकिन मेरे लिए कुछ भी नहीं बदला, सब कुछ वैसे का वैसा ही है।"

फिर उसने मुझे कहा – "हाँ, ठीक है, तुम्हारी बातें समझ रही हूँ मैं, लेकिन मैं वापस से बात नहीं कर सकती।

तुम

"फिर क्या हुआ? तुम दोनों की क्या बातें हुईं?"

हम

मैंने कहा — तुमने ही मुझसे कहा था कि तुम कभी मुझे छोड़कर नहीं जाओगी,

फिर ये सब क्यों हुआ? क्यों छोड़कर चली गई मुझे?

"तो वो बोली — ये सब करने के लिए तुमने ही मुझे मजबूर कर दिया।

प्यार अलग होता है, लेकिन किसी के पीछे पड़ जाना अलग बात है।

"मैंने कहा — अगर तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारे पीछे पड़ा हूँ, तो तुम मुझे माफ़ कर दो।

एक गलती तो भगवान भी माफ़ कर देता है, और मेरे लिए तुम ही मेरा भगवान हो। "तो प्लीज़, मुझे माफ़ कर दो।

तुम नहीं हो ऐसी, जो तुम बनने की कोशिश कर रही हो।

तुमको पता, हमको रात को नींद नहीं आती है हर पल, हर किसी में तुमको ढूंढते रहते हैं

उसने बोला — "यार, एक बात बताओ, मेरे दोस्तों से बार-बार बात करना जबकि मैंने मना किया हुआ है, ये सब सही है क्या?"

तुम प्यार करते हो, इसलिए तुम्हें ये सब ठीक लग रहा है,

पर मैं तो प्यार नहीं करती, इसलिए मुझे तो ये सब सही नहीं लगता।

तुम

फिर तुमने क्या बोला?

हम

मैंने कहा, यार कभी-कभी ना जब तुम बहुत ज़्यादा याद आती हो, तुम्हारी बहुत चिंता होती है, तब हार मानकर तुम्हारे दोस्तों से बात करता हूँ — बस ये जानने के लिए कि तुम कैसी हो। "हाँ, मुझे पता है कि तुमने मुझे मना किया हुआ है किसी से भी बात करने के लिए, लेकिन मैं क्या करूँ?

मैं तो बस ये जानने के लिए ही बात करता हूँ कि तुम कैसी हो। एक बार खुद को मेरी जगह रखकर देखो, शायद तब तुम्हें समझ आए कि तुम्हारे बिना मेरी ज़िंदगी में क्या हो रहा है। "हम ये नहीं कह रहे कि आप हमसे प्यार करो, प्यार करना या न करना आपका फैसला है पर आप हमसे बस बात तो कर लिया करो।

वो बोली — बात करने से क्या होगा?

फिर से वही सारी चीज़ें दोबारा होंगी।

तुम

फिर क्या हुआ?

हम

फिर मैंने उसको बताया प्यार क्या होता है।

तुम

तुमने उसको कैसे बताया कि प्यार क्या होता है?

हम

"मैंने कहा, मेरे हिसाब से मुझे नहीं लगता कि बिना मिले और बिना किसी को देखे किसी व्यक्ति को किसी से लगाव हो सकता है।" लगाव तब होता

जब दो लोग साथ रहते हैं एक-दूसरे से मिलते है दिन में कई बार, तब लगाव होता है और मै तो तुमसे कभी मिला भी नहीं हूं , ना कभी तुमको सामने से देखा है फिर मेरे साथ ये सब क्यों हो रहा है क्यों नहीं रह पा रहा मैं तुम्हारे बिना?

क्यों तुमको एक बार देखने के लिए तुमसे बात करने के लिए मैं मरा जा रहा हूँ?

बताओ तुम? नहीं है ना जबाब तुम्हारे पास!

"ये प्यार है मेरा" और तुम जितना जल्दी मेरे प्यार को समझोगी उतना मेरे लिए अच्छा होगा और अगर नही समझ पायी तो मैं ऐसे ही पल- पल खुद में मरता रहूँगा। मैंने कभी तुमसे ये भी नहीं कहा कि तुम मुझसे प्यार करो, हमने हमेशा यही चहा कि तुम हमसे बात कर लिया करो बस, मै सिर्फ तुमको प्यार करता हूँ तुम हो तो मैं हूँ।

मैं थक गया खुद से तुम्हारे बिना अब नहीं रहा जाता।

तुम

फिर ये सब सुनकर उसने क्या कहा?

हम

उसने कहा 'यार मत करो ना इतना प्यार'... ... .

मैंने बोला – जहाँ तक हमने चीज़ों को समझा है, हमें बस यही समझ आया है कि प्यार सिर्फ़ एक बार होता है। दूसरी बार तो बस ज़िंदगी से एक समझौता होता है।

अब आपका मेरे जीवन में होना या न होना, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता — क्योंकि हम तो सिर्फ़ आपसे ही प्यार करते हैं और करते रहेंगे अपने जीवन के अंत तक।

उसने कहा — प्यार सिर्फ़ एक बार नहीं होता।

तुम सब कुछ भूलकर आगे बढ़ सकते हो, अगर सच में चाहोगे तब अगर नहीं चाहोगे, तो वो अलग बात है… क्योंकि मैं अब वापस नहीं आ सकती।

जाने दो मुझे।

मैंने कहा — "भूल जाना" ये शब्द प्यार के लिए बना ही नहीं है।

जिस व्यक्ति से हम प्यार करते हैं, उसे कैसे भुलाया जा सकता है?

तुम मुझे छोड़कर मत जाओ, मैं बस इतना ही कह सकता हूँ।

तुम्हें भी पता है, तुम्हारे बिना मैं कैसे रह पाऊँगा…

फिर भी तुम जाने की ज़िद कर रही हो।

फिर वह, हमेशा की तरह, मुझे समझाने लगी।

उसने कहा — किसी के जाने से कुछ खत्म नहीं होता।

अगर ज़िंदगी में एक दरवाज़ा बंद होता है, तो कई नए दरवाज़े खुल जाते हैं।

कभी भी कुछ खत्म नहीं होता। तुम खुद से प्यार करो, खुद को खुश रखो — बाकी सारी बातें, वक्त के साथ खुद-ब-खुद ठीक हो जाएँगी।

फिर मैंने उससे पूछा — “अच्छा, एक बात बताओ… हम कब तक ऐसे ही रहेंगे?”

तो उसने कहा — हमेशा

वो बोली — “सच कहूँ तो मैं थक गई हूँ… इस प्यार से, खासकर अभी।

तुम अपना ख़याल रखो, ज़िंदगी में आगे बढ़ो, ज़िंदगी के मज़े लो।

ये सब क्या लेकर बैठे हो? ये तुम्हारी ज़िंदगी की बस एक किताब है —

इसे बंद कर दो, बाकी किताबें पढ़ो… ज़िंदगी फिर से रंगीन हो जाएगी।

इतना प्यार करने से कोई फ़ायदा नहीं है।

हमारी मंज़िलें अलग-अलग हैं — तो फिर साथ चलने का क्या मतलब?

तुम

फिर क्या तुमने उस किताब को बंद कर दिया?

हम

नहीं… मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया।

बिना मिले मैं किसी भी किताब को बंद नहीं कर सकता।

उसकी सारी बातें ठीक हैं —

लेकिन, मैं एक बार उसे देखना चाहता हूँ…

उससे मिलना चाहता हूँ।

हाँ, मान लिया कि हमारी मंज़िलें अलग-अलग हैं,

लेकिन हमारा रास्ता तो एक ही है।

हम एक ही रास्ते पर साथ चलकर,

एक-दूसरे का साथ देकर —

एक-दूसरे की मंज़िल तक पहुँच सकते हैं। वो कहती है — सफ़र ख़ूबसूरत है मंज़िल से भी, इसलिए मैं मानता हूँ कि हम मंज़िल की फ़िक्र किए बिना,

इस सफ़र को ख़ूबसूरती से जी सकते हैं —

और आख़िर में अपनी मंज़िल तक पहुँच सकते हैं।

तुम

सही कहा तुमने — मंज़िल से फर्क नहीं पड़ता, अगर तुम सफ़र को जीते रहोगे, तो मंज़िल ख़ुद-ब-ख़ुद तुम्हारे पास चली आएगी।

हम

और मुझे खुद पर और उस पर पूरा भरोसा है कि हम बहुत जल्द एक साथ हो जाएंगे।

अभी वो अपनी पढ़ाई पूरी करने में लगी हुई है और साथ ही अपनी ज़िंदगी के मज़े ले रही है। उसे इस तरह खुश देखकर मैं भी बहुत खुश हूँ। जब उसे समय मिलेगा, तब वह फिर से मेरे पास लौट आएगी और मुझसे बात करने लगेगी।

तुम

और क्या बात हुई तुम्हारी?

हम

जब मैंने उससे पूछा था कि हम कब तक ऐसे ही रहने वाले हैं, तो वह बोली — हम हमेशा ऐसे ही रहने वाले हैं। मैंने मुस्कराकर कहा — चलो, कुछ तो है जो हमारे बीच हमेशा रहने वाला है।

तो वह कहती है — हम हमेशा ऐसे ही रहेंगे, यानी मैं बात नहीं कर पाऊँगी, और तुम परेशान होगे।

मैंने कहा — मेरी परेशानियों से तुम्हें क्या फर्क पड़ता है, मैं कैसे भी रहूँ।

वो बोली — मैं तो बस तुम्हें आख़िरी बार समझाने आई थी, जा तो मैं पहले ही चुकी हूँ। और अब बात भी नहीं कर सकती……

मैंने बोला बात तो हमारी काफी समय से नहीं हुई है मुझे पता है तुम परेशान हो गई हो इन सब चीज़ों से

"उसने कहा — मैं सच में परेशान हो गई हूँ, तुमसे नहीं बल्कि सब लोगों से। लोग हमेशा दूसरों को जज करते हैं। मैं तुम्हारी बात नहीं कर रही, क्योंकि तुमने मुझे कभी जज नहीं किया।

लेकिन अब मैं बात नहीं कर सकती, तो प्लीज़ मेरी 'ना' को जितना जल्दी समझोगे, उतना ही तुम्हारे लिए बेहतर होगा।

तुम भी परेशान नहीं होगे… बस अब खुद पर ध्यान दो, खुद का ध्यान रखो।

तुम

फिर तुमने क्या फ़ैसला लिया?

क्या तुम उसकी ज़िंदगी से चले जाओगे,

या फिर उससे बात करने की कोशिश करते रहोगे?

हम

ये सवाल ही गलत है कि "क्या मैं उसकी ज़िंदगी से चला जाऊँगा?", क्योंकि मैं कभी उसकी ज़िंदगी में रहा ही नहीं- मैं बस उसकी ज़िंदगी का एक हिस्सा हूँ। मैं उससे बात करने की कोशिश इसलिए करता हूँ ताकि खुद को समझा सकूँ, उसके लिए कुछ कर सकूँ। फिर मैं उसे एक बार देखना चाहता हूँ — उसके पैरों को छूना चाहता हूँ, उसको धन्यवाद बोलना चाहता हूँ मेरी ज़िंदगी का हिस्सा बनने के लिए,

उसने मुझसे कहा था — 'मैं जितना भी तुम्हें समझाने की कोशिश कर लूँ, कोई फ़ायदा नहीं है। तुम समझ ही नहीं पा रहे हो, मुझे पता है। ये

"वो कहती है कि जबसे मैं तुमसे बात कर रही हूँ, तुम तीन बातों को लेकर बैठे हो — पहली, कि तुम मुझसे प्यार करते हो;

दूसरी, कि मैं तुम्हारी ज़िंदगी में वापस आ जाऊँ; और

तीसरी, कि मेरे जाने के बाद तुम्हारी ज़िंदगी रूक गयी है, खराब हो गयी है।

इसमें पहली और दूसरी बातें तुम्हारे हाथ में नहीं हैं, लेकिन तीसरी — तुम्हारी ज़िन्दगी रुक गई है और खराब हो गई है। तो तुम अपनी ज़िन्दगी सुधारो; फिर से सही रास्ते पर आ जाओ — सब ठीक हो जाएगा। और आगे अगर किसी लड़की से मिलो तो जासूसों की तरह हरकतें मत करना। जो जा रहा है, उसे जाने दो। अगर तुम उसे रोकोगे तो तुम परेशान होगे। अपने आप पर ध्यान दो — अपनी ज़िंदगी बर्बाद मत करो, प्लीज।

अगर तुम मेरे फ़ैसले की इज़्ज़त करते हो, तो बार-बार मुझसे बात करने की कोशिश मत किया करो। जो तुम्हारा है, वो तुम्हें मिल जाएगा — और जो नहीं है, उसे जाने दो।

ठीक है, मैं समझती हूँ कि तुम्हारी ज़िंदगी में बहुत परेशानियाँ हैं; सबकी ज़िंदगी में होती हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि तुम दिन भर रोते रहो। इन सब चीज़ों से बाहर निकलो।

सच कहूँ तो, मुझे तुमसे डर लगता है — कि कहीं तुम कुछ ग़लत न कर बैठो।

सच कहूँ तो, हम कभी ना मिले — तुम्हारी भी भलाई इसी में है और मेरी भी।

तुम

उसने ऐसा कहा - कि कभी ना मिलूँ? ये सुनकर तो तुम्हारी

ज़िंदगी रूक गयी होगी?

हम

पहले तो मुझे हँसी आ गई,

लेकिन फिर दो पल के लिए सब कुछ शांत हो गया —

क्योंकि जिसे हर पल मैंने अपनी दुआओं में माँगा,

आज उसी ने न मिलने की दुआ माँग ली।

भगवान तेरी हर इच्छा पूरी करे,

बस एक — मुझसे न मिलने की — इच्छा को छोड़कर।

और फिर उसने जाने को कहा,

मैंने उसे शांति से जाने दिया,

पर मेरा दिल — मेरी आत्मा — जैसे शरीर से बाहर आकर उसे रोकने की कोशिश कर रहे थे।

मेरे हाथ काँप रहे थे…

जाते-जाते उसने कहा —

"अगर तुम मेरी ज़रा-सी भी इज़्ज़त करते हो,

तो मुझसे बात करने की कोशिश मत करना,

और न ही मेरे किसी जानने वाले से बात करना।

जा रही हूँ मैं…

तुम अपना ध्यान रखना।

तुम

फिर क्या किया तुमने उसके जाने के बाद कैसी चल रही है जिंदगी?

हम

उसने मुझे ब्लॉक कर दिया,

पर मैं अब भी रोज़ उसके उसी ब्लॉक किए हुए अकाउंट पर मैसेज करता हूँ —

इस आस में कि एक दिन वो लौट आएगी,

और सब कुछ फिर से ठीक हो जाएगा।

फिर एक दिन अचानक, बिना सोचे, मैं उसके शहर — [काशी]

बनारस — चला गया…

सिर्फ़ एक इच्छा लेकर मैं काशी चला गया —

कि शायद किसी रास्ते पर अचानक हम मिल जायेंगे, किसी घाट पर, किसी मंदिर में वो मुझे मिल जाए। काशी की कुछ गलियाँ शांत थीं, पर कुछ गलियों में उत्सव चल रहा था।

हर मोड़ पर लगता — बस यहीं कहीं होगी वो।

घाटों पर बहती गंगा की लहरों में उसका नाम सुनाई देता था,

आरती की घंटियों के स्वर में उसके होने का एहसास होता था

मैं भीड़ में हर चेहरों में उसको ढूंढता रहा

हर परछाईं में उसे खोजता रहा।

पर वो नहीं मिली…

मिली तो बस उसकी याद — एक अलग खुशी का एहसास मुझे हर पल हो रहा था – कि मैं उसके शहर में हूँ।

तुम

काशी इच्छाओं का शहर है —

हर कोई वहाँ कोई न कोई इच्छा लेकर आता है।

तो क्या तुम्हारी भी इच्छा पूरी हुई?

हम

हर गली, हर घाट, हर धाम तुझे ही खोजा,

तू ना मिली, लेकिन शिव मिल गया।

हर जगह से हारकर, रात को मणिकर्णिका घाट पहुँचकर मैंने खुद को खो दिया।

पर उस अंधकार के बीच, जलते हुए शवों की रोशनी में

मैंने खुद के भीतर — तुमको और शिव को पा लिया,

और खुद को शुन्य कर दिया।

तुमसे न मिलने का ग़म तो था,

मगर एक बात की खुशी भी थी —

कि मैं तुम्हारे शहर तक आ सका,

तुम्हारी हवा में साँस ले सका।

काशी से जाते समय

आँखों में आँसू थे,

मगर दिल में एक नई उम्मीद थी —

कि शायद बहुत जल्द

मैं तुमसे मिलूँगा।

तुम

अब तुम क्या करोगे?

उसे कहाँ ढूंढोगे?

और उससे कैसे मिलोगे?

हम

मेरे लिए शिव से मिलना आसान था —

स्वयं के भीतर कई बार मैंने शिव तत्व की प्राप्ति की है।

लेकिन उससे मिलना कठिन हो रहा है, न जाने क्यों।

मैं बस खुद में खो जाता हूँ, उसकी यादों में खो जाता हूँ।

उससे बात करने की कोशिश करने लगता हूँ, उसके दोस्तों से बात करने लगता हूँ…

और इन सब चीज़ों से वह और परेशान हो जाती है। और मेरी ऐसी हरकतों से वो मुझसे और भी दूर हो जाती है

काशी के बाद उसको ढूंढते हुए मै ऋषिकेश चला गया फिर से वही सब अहसास हुआ मुझे, जो काशी मे हुआ एक बार फिर से मैं माँ गंगा की गोद में सो रहा था सुकून से, उसकी हवा में साँस ले रहा था, और हर चेहरे में उसको खोजने लगा आखिर में हार मान कर ऋषिकेश में राम झूला के पास मणिकूट पर्वत पर स्थित भूतनाथ मंदिर (भूतेश्वर महादेव) सात मंजिल ऊपर चढने के बाद शिव के सामने माथा झुका कर जब शिव को देखा तो शिव मे उसका चेहरा दिखने लगा और उसको और शिव को देखकर मैं दिल ही दिल में रोने लगा आज भी उस पल को याद करके मैं खुब रोता हूँ फिर जब ऋषिकेश से वापस आया तो मैंने उसको मैसेज कर दिया, उसका फोन आया नराज थी वो मुझपे गुस्सा करने लगी और गुस्से में उसने बोला कि मुझे फर्क नहीं पढता तुमको जो करना है कर लो…..

तो मैंने उसको बोला अगर अगर मैं मर जाऊ तो भी तुमको कोई फर्क नहीं पढ़ता?

उसने कहा मुझे फर्क नहीं पढ़ता जो करना है कर लो, दो मिनट की गहरी शांति के बाद मैने उसको बोला फोन रख दो।

तुम

है! फिर क्या हुआ?

हम

फिर फोन रखने के बाद उसने अपनी माँ को सब कुछ बताया, उसकी माँ ने हमको फोन किया और समझाने लगी हर चीज के लिए, माँ ने कहा क्या चाहते हो तुम?

मैंने कहा मै बस एक बार देखना चाहता हूं, उससे मिलना चाहता हूँ, माँ ने कहा या तो तुम मेरे बेटी को देख लो या इसके पापा तुमको देख लेंगे……

अब उसकी माँ को कौन ये समझायेगा की, जो इंसान उससे एक बार मिलने के लिए मरने को भी तैयार है तो उसके पापा क्या ही कर लेंगे उसका।

फिर भी हमने माँ की बातों की इज्जत रखी और उनको बोल दिया की अब आपने मना कर दिया तो मैं उनकी बेटी से मिलने की कोई कोशिश नहीं करुंगा, उसके बाद हमने माँ से माफी मांगी है और उस बात को खत्म कर दिया है।

तुम

मतलब अब तुम उससे मिलने की कोशिश नहीं करोगे?

हम

हाँ, अब मैं ना तो उससे बात करने की कोशिश करुंगा और ना ही मिलने की कोशिश करूँगा पर हमेशा मेरे दिल में एक सवाल रहेगा –

क्या सच में मैं गलत था, या मेरे प्यार करने का तरीका गलत था?

अब इस सवाल का जबाब भी उसी के पास है और जिंदगी भर मैं इस सवाल का जबाब ढूँढता रंहूगा।

तुम

मेरे हिसाब से ना तो तुम गलत हो और ना ही तुम्हारे प्यार करने का तरीका, गलती केवल समय की थी, तुम कभी उससे मिले नहीं लेकिन प्यार तुमने उसे सबसे ज्यादा किया है और अंत तक करते रहोगे यदि तुम-दोनों मिले होते तो परिस्थितियां कुछ और ही होती ।

हम

हाँ शायद तुम ठीक ही बोल रहें हो, पर तुम क्या सोचते हो इससे मुझे कोई फर्क नहीं पढ़ता..

बल्कि वो क्या सोचती है इस बात से फर्क पड़ता है और जिंदगी भर पड़ता रहेगा।

(मैं)

हाँ, मैंने तुमसे प्यार किया और समय के अंत तक करता रहूँगा मेरी हर गलती के लिए मैंने सौ बार माफी भी मांगी और अगर मेरा प्यार सच्चा है तो हम जरुर एक दिन मिलेगें।

मेरी गतली बस यही है कि तुम्हारे हर बार मना करने पर हमने तुमसे बात करने की कोशिश करी, तुमसे मिलने की कोशिश कर रहा हूँ

पहले जब हमको तुम्हारी याद आती थी तो हम तुम्हारी फोटो देख कर शांत हो जाते थे लेकिन हर जगह तो हम तुम्हारे फोटो को नहीं देख सकते इसलिए अब हमने खुद में तुमको खोज लिया है तुमको मिलना मेरा एक सपना बन गया और समय के साथ ये सपना सच होता दिख रहा है

मेरे लिए तुम चाँद मेरा

मेरी खुली आँखों का एक सपना

अपने सपने में खाव्बों को पूरा होते हुए देखा है मैंने, अपने आप में मर कर तुझमें खुद को जिंदा देखा है मैंने, पर हकीकत में मेरा दिल मर चुका हूँ

मेरे लिए तू चाँद मेरा… . … .

कहानी अभी जारी है

मैं मरा नही हूँ।